महत्वपूर्ण एवं खास

टेलिकॉम की टकराहटें

भारतीय दूरसंचार क्षेत्र का अंदरूनी संकट अब पूरी दुनिया के सामने आ गया है। देश की शीर्ष टेलिकॉम कंपनी भारती एयरटेल के चेयरमैन सुनील मित्तल का कहना है कि भारत में पुरानी टेलिकॉम कंपनियों के लिए काम करना कठिन होता जा रहा है। स्पेन के बार्सिलोना में आयोजित मोबाइल वर्ल्ड कांग्रेस के मौके पर उन्होंने कहा कि दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (ट्राई) के नए नियमों के खिलाफ अदालत जाने के सिवाय कोई दूसरा रास्ता उनके पास नहीं बचा है। अभी कुछ समय पहले वोडाफोन ने भी ट्राई पर ऐसा ही आरोप लगाया था। उनका संकेत इस तरफ है कि ट्राई एक तटस्थ नियामक की तरह काम करने के बजाय नई टेलिकॉम कंपनी जियो को फायदा पहुंचाने की कोशिश कर रहा है। पिछले दिनों एक के बाद एक देश की कई टेलिकॉम कंपनियां बदहाल होती देखी गई हैं। अभी भारत की छठें नंबर की टेलिकॉम कंपनी एण्ड आईएस क्यूयूओ;एयरसेल एण्ड आरएसक्यूयूओ; ने खुद को दिवालिया घोषित किया। सरकार का इनके हाल पर आंखें मूंदे रहना इस सेक्टर में पस्तहिम्मती ला रहा है। सितंबर 2016 में रिलायंस जियो की लॉन्चिंग के बाद से उसकी बेहद सस्ती सेवाएं टेलिकॉम सेक्टर में उथल-पुथल की सबसे बड़ी वजह बन गई हैं। प्रतिद्वंद्वी कंपनियां जियो पर प्रिडेटरी प्राइसिंग (अपना माल सस्ता करके औरों को धंधे से बाहर कर देने) का आरोप लगा रही हैं। लेकिन ट्राई की दलील है कि टेलिकॉम कंपनियों की संस्था सीओएआई इस मुद्दे पर अदालत जाकर वहां मुंह की खा चुकी है। ट्राई के एक हालिया आदेश में कहा गया कि प्रिडेटरी प्राइसिंग होने या न होने का मामला भविष्य में ऐवरेज वेरिएबल कॉस्ट के आधार पर तय किया जाएगा। यानी सेवाओं की कीमत लंबी अवधि के औसत के रूप में देखी जाएगी। कुल मिलाकर मामला उलझ गया है और सरकार की तटस्थता भी सवालों के दायरे में आ गई है। यह स्थिति न सिर्फ कारोबार के लिए, बल्कि दूरगामी रूप से उपभोक्ताओं के लिए भी सकारात्मक नहीं कही जा सकती।

पेश हुई एक मिसाल

बहुत ही खास रही इस बार की होली। खास इस अर्थ में कि होली के आपसी भाईचारे और प्रेम के संदेश को हिंदुओं और मुस्लिमों, दोनों ने ही बखूबी आत्मसात किया। वे पर्याप्त सहिष्णु बने रहे और हर हाल में एक-दूसरे की भावनाओं का ख्याल रखा। कहीं से भी ऐसी कोई खबर नहीं आई कि त्योहार का मजा किरकिरा हो जाए। दरअसल शुक्रवार को दुलहैंडी (छरड़ी) पड़ी थी। दोपहर के जिस वक्त नमाजी जन मस्जिदों की ओर प्रस्थान करते हैं, वही वक्त रंग खेलने का भी होता है। ऐसे में प्रशासनिक अधिकारियों को चिंता थी कि कहीं जबरन रंग डालने का कोई मामला सामने न आ जाए और बेमतलब ही तनाव व्याप्त हो जाए। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। पूरे देश में जितनी शालीनता से होली का त्योहार मना, उतनी ही शांति से जुमे की नमाज भी अता की गई। सामाजिक सौहार्द्र की जैसे एक मिसाल ही पेश हो गई। तमाम आशंकाएं बेबुनियाद साबित हुई। तसल्ली हुई कि एक-दूसरे की भावनाओं की कद्र करनेवालों की कोई कमी नहीं। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अपील ने भी शांतिपूर्ण माहौल बनाने में मदद की। उन्होंने अनुरोध किया था कि अगर कोई होली नहीं खेलना चाहता है, तो उस पर जबरन रंग न डाला जाए। उसकी भावनाओं की कद्र की जाए। सचमुच लोगों ने होली की मूल भावना को समझा और पूर्णतः शालीन व्यवहार किया। कहीं कोई गड़बड़ी नहीं हुई। असल में होली का त्योहार जितना मस्तीभरा है, उतना ही परस्पर प्यार-मोहब्बत का परिचायक भी है। सदियों से यह त्योहार लोगों के भीतर प्रेम की भावनाएं भरता रहा है और सभी धर्मों के बीच लोकप्रिय रहा है।

सर्वशक्तिमान शी का नया चीन

चीन में कुछ चीजें कमाल की हो रही हैं। चीनी समाजवाद को अब राष्ट्रपति शी के चश्मे से देखने की कवायद शुरू हो रही है। शी जो विचार दे चुके हैं, या देंगे, उसे मंदारिन में 'चीनी कैरेक्टरिस्टिक' के अनुरूप एक किताब की शक्ल में लाई जाएगी। साठ-सत्तर के दशक में चेयरमैन माओ के विचार भी डायरी की शक्ल में दुनिया देख चुकी है। वहां हर हाथों में माओ की पुस्तक लोग देखते थे। अब शी का देखेंगे। मंगलवार को चीनी सरकार का मुखपत्र 'पीपुल्स डेली' में इस वास्ते एक लंबा-चौड़ा लेख छपा है। ऐसा कुछ होना होता है, तो उसे आलेख के रूप में छापकर जनता को बता दिया जाता है। शी के लिए संविधान को बदल देना दर्शाता है कि वे माओ के बाद दूसरे सर्वशक्तिमान नेता के रूप में उभरे हैं। इस समय जो चीनी संविधान है, उसे 1982 में लागू किया गया था। इसे चार बार 1988, 1993, 1999 और 2004 में संशोधित किया गया। तंग श्याओ फिंग की थ्योरी को 1999 में संविधान संशोधन के बाद लागू किया गया था। इस समय चीन में ऐसा समाजवाद है, जिसके बारे में शी सोचते हैं। शी के समाजवाद का ढोल ज़ोरों से पीटा जा रहा है। शी के विचार एक बार छप जाएं तो वह हर देशवासियों के हाथों में होगा, और उस पवित्र पुस्तक की आयतें याद करना अनिवार्य हो जाएगा! सितंबर, 2017 में चीनी राष्ट्रपति शी का शहर शिएन जाना हुआ था। वहां के आमजन शी को राजा मानते हैं, देश का राष्ट्रपति नहीं। बात सिर्फ़ शी के शहर शिएन तक नहीं है, शंघाई, पेइचिंग के गांवों में भी ऐसे ही सुर में आमजन बात करते कि 'शी चिनफिंग देश के राजा हैं!' इस समय चीनी सत्ता प्रतिष्ठान में जिस तरह की कवायद चल रही है, उससे लगता है, 64 साल के शी अपने लिये 'राजसत्ता' का राजमार्ग स्थाई रूप से तैयार कर रहे हैं। चीनी संविधान में राष्ट्रपति पांच-पांच वर्षों के लिए दो टर्म रह सकता है। उस हिसाब से शी का दूसरा कार्यकाल 2023 के शुरू में समाप्त हो रहा है। शी अब दो टर्म वाली सीमा को पलट देना चाहते हैं। चीनी उप राष्ट्रपति के कार्यकाल के लिए भी ऐसा ही प्रस्ताव है। यह प्रस्ताव देश की सर्वोच्च संस्था 'सेंट्रल कमेटी' को भेज दिया गया है। पांच मार्च, 2018 को चीनी संसद की बैठक में सेंट्रल कमेटी से पारित प्रस्ताव रख देना है। चीनी संसद को तंज़िया 'रबर स्टांप पार्लियामेंट' कहते हैं, वहां इस पर मुहर लग जानी है। राजनीतिक टिप्पणीकार और इतिहासकार झांग लिफान की प्रतिक्रिया थी 'यह खबर यहां के लिए अप्रत्याशित नहीं है। इसकी भविष्यवाणी मुश्किल है कि शी कितने साल सत्ता में बने रहेंगे।'25 अक्तूबर, 2017 को संसद की बैठक में शी को दोबारा से राष्ट्रपति चुनने पर मुहर लगाई गई थी। उस समय देशभर से आये दो हज़ार 336 डेलीगेट्स को सेंट्रल कमेटी के 205 सदस्यों को भी चुनना था। इसी सेंट्रल कमेटी ने राष्ट्रपति शी को दोबारा से चुना, और उन्हें चेयरमैन माओ के बराबर का ओहदा दिया था। किसी देश का सुपरपॉवर होना दीगर बात है, पर नेता का सर्वशक्तिशाली हो जाना उससे भी बड़ी बात है। इतनी असीमित शक्तियां, जिसे कोई चुनौती न दे सके, जो पुराने राजनीतिक विचारों के द्वंद्वात्मकता को अपनी ज़रूरत के अनुरूप ढाल दे, और वह एक अरब 38 करोड़ को छू रही जनसंख्या वाले वाले चीन की वैचारिक सोच की दिशा बदल दे, ऐसा 19वीं कांग्रेस की बैठक में शी ने कर दिखाया था। शी चिनफिंग 2012 में जब सत्ता के शीर्ष पर नियुक्त हुए, तो उनके बारे में आकलन था कि वे तंग श्याओ फिंग के बराबर के नेता हो जाएंगे। मगर, आकलन में इस चूक को स्वीकार करते हुए आस्ट्रेलिया के पूर्व प्रधानमंत्री केविन रूड ने फाइनेंशियल टाइम्स में लिखा, 'पांच साल पहले मैंने कहा था कि शी अधिक से अधिक तंग श्याओ फिंग के बराबर हो जाएंगे। मगर, मैं ग़लत था, वे आज माओ के समानांतर हैं।' केविन रूड ने अपनी भूल को जिस ईमानदारी से स्वीकार किया, वह दुनिया के सामने है। शी को सर्वशक्तिमान बनने के वास्ते कितनी बलि चढ़ानी पड़ी है, वह जानना भी दिलचस्प है। एक ऐसा वक्त भी आया, जब चीन के राजनीतिक अंत:पुर में सत्ता पलट की स्थिति बन गयी थी। जो इसे रच रहे थे, उन्हें चीन की अंदरूनी राजनीति में 'टाइगर' के रूप में जाना जाता था। दो साल पहले चीन के पूर्व सुरक्षा प्रमुख और पार्टी में वरिष्ठ पद पर विराजे ज़ोऊ योंगखांग भ्रष्टाचार के आरोप में गिरफ्तार किये गये। चीन में दो पार्टियों के शासन की अवधारणा को आगे बढ़ाने वाली 'छोंगछिंग पार्टी' के सेक्रेट्री पो शिलाई, सेंट्रल मिलिट्री कमीशन के दो वायस चेयरमैन क्रो पोक्सियोंग और शू खाईहोउ, पूर्व राष्ट्रपति हु चिन्थाओ के सलाहकार लिंग चीहुआ, और सुनचेनकाई जैसे 'छह शेर' एक के बाद एक करके गिरफ्तार किये गये। 19वीं कांग्रेस से पहले शी ने उससे भी बड़ा काम 23 लाख की संख्या वाली पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) पर अपना नकेल कसकर दिखाया। पीएलए को नियंत्रित करने वाले सेंट्रल मिल्ट्री कमीशन के ज्वाइंट स्टाफ प्रभाग के प्रमुख जनरल फांग फेंगहुई और पॉलिटिकल वर्क डिपार्टमेंट के प्रमुख जनरल झांग यांग जिस तरह से नप गये, उससे शी ने साबित किया कि 11 सदस्यीय सेंट्रल मिल्ट्री कमीशन में पत्ता भी हिलेगा, तो राष्ट्रपति की इज़ाजत से। चीनी सेना में दस लाख के क़रीब छंटनी, चीनी एयरफोर्स और नेवी में आमूलचूल परिवर्तन एक ताकतवर नेता ही कर सकता था। शी ने पूरे पांच साल की अवधि में 440 मिनिस्ट्रियल रैंक के अधिकारियों को भी जेल भिजवाया। यह सही है कि भ्रष्टाचार निरोधक अभियान के बहाने शी ने अपने बहुत से राजनीतिक विरोधियों को भी निपटाया है।

करवट बदलती राजनीति

पूर्वोत्तर में बीजेपी का एक बड़ी ताकत के रूप में उभरना एक बड़े राजनीतिक बदलाव का संकेत है। इसका न सिर्फ पूर्वोत्तर बल्कि राष्ट्रीय राजनीति पर भी गहरा असर पड़ेगा। बीजेपी ने त्रिपुरा में लेफ्ट का मजबूत किला ढहा दिया और नगालैंड में शानदार प्रदर्शन किया। हाल तक इसकी कल्पना भी असंभव थी। यह बात सही है कि नॉर्थ-ईस्ट के राज्यों का अपना कोई मजबूत आर्थिक ढांचा नहीं है, इसलिए वे केंद्र में सत्तारूढ़ पार्टी के साथ मिलकर चलने में विश्वास करते रहे हैं। लेकिन बीजेपी ने उनके साथ एक अलग तरह का रिश्ता बनाया है। मोदी सरकार ने नॉर्थ-ईस्ट पर खासतौर से फोकस किया। खुद प्रधानमंत्री ने वहां की कई यात्राएं कीं। केंद्रीय मंत्रियों का आना-जाना लगातार लगा रहा। वहां के लोकप्रिय नेता किरन रिजिजू को केंद्रीय मंत्रिमंडल में अहम विभाग सौंपा गया। पूर्वोत्तर में इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास के लिए कई बड़ी परियोजनाएं शुरू की गईं, जिनसे वहां की जड़ अर्थव्यवस्था को गति मिल सकती है। इस तरह बीजेपी ने उन राज्यों के अलगाव को काफी कम किया और वहां के लोगों का विश्वास जीता। नॉर्थ-ईस्ट को लेकर केंद्र सरकार की सक्रियता के कारण ही इस बार तीन राज्यों के चुनाव मीडिया में छाए रहे। पूर्वोत्तर के इलेक्शन को इतनी कवरेज शायद ही कभी मिली हो। चुनाव में बीजेपी ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी। खुद पीएम ने त्रिपुरा में चार सभाओं को संबोधित किया। वहां लेफ्ट के पास मुख्यमंत्री माणिक सरकार की ईमानदारी और सादगी के सिवा और कोई बड़ा मुद्दा नहीं था। किसी सीएम का ईमानदार होना अच्छी बात है, मगर जनता को रोजी-रोटी और तरक्की भी चाहिए। राज्य की जनता इन मामलों में निराश होने लगी थी। फिर माणिक सरकार निचले स्तर के भ्रष्टाचार को रोकने में कामयाब नहीं हो पाए। त्रिपुरा में सीपीएम की हार महज एक चुनावी पराजय नहीं है। सीपीएम की सरकार जहां भी हारती है, वहां पार्टी अपनी जड़ से ही उखड़ जाती है। पश्चिम बंगाल में यही देखने को मिला। सीपीएम की मुश्किल यह है कि वह मुख्यधारा की पार्टियों के बरक्स अब तक अपनी कोई वैकल्पिक नीति पेश नहीं कर पाई।

आधार के फेर में हुए निराधार

एक यूनानी राजा था सिसीफस। बेहद धोखेबाज और निर्दयी। वह कई बार मृत्यु को भी धोखा दे चुका था। फिर ईश्वर ने उसे अभिशाप दिया, कहा कि मुक्ति को वह एक भारी पत्थर लेकर पहाड़ की चोटी पर जाये। पर जब भी वह पत्थर को लेकर चोटी के समीप पहुंचने वाला होता, तभी उसके हाथ से पत्थर छूट जाता और वापस ज़मीन पर पहुंच जाता। ऐसा बार-बार हुआ और वह पत्थर लेकर कभी भी पहाड़ की चोटी पर नहीं पहुंच सका। पर हमारे यहां माई के लाल ऐसे हैं जो न तो किसी खुदा के अभिशाप से डरते हैं, न किसी पाप से डरते हैं। पत्थर तो क्या बैंक ही ले उड़ते हैं। 'नीरव' शब्द का अर्थ है चुप। और नीरव मोदी अपने नाम को सार्थक करते हुए चुपचाप ये जा और वो जा। चोर-डाकुओं को भी चोरी या लूट के लिए हाथ-पांव मारने पड़ते हैं। जान जोखिम में डालकर ज़ोर लगाना पड़ता है। किसी ने लॉकर पर हाथ फेरे, किसी ने सुरंग बनाकर बैंक डकैती की, किसी ने एटीएम उखाड़े। हर बार यही लगता कि चोर और चौकीदार में मिलीभगत है। पर जनाबे आली ने तो जादूगर की तरह करिश्माई अन्दाज़ में मैनेज किया और मैनेजरों को मूर्ख बनाकर चलते बने। बैंक खाताधारकों के आधार लिंक करने में जुटे रहे और लुटेरा बैंक को ही निराधार कर गया। इस बार मिलीभगत चोर और चौकीदार में नहीं थी। शक की सूई घूम-घूम कर कभी राजनेताओं पर आ टिकती है तो कभी उद्योगपति और कभी बैंक के आला अफसरों पर। और अपने जैसे आम आदमी सिवाय हैरान होकर ठगा-सा महसूस करने के और कर भी क्या सकते हैं। धोबी के घर चोरी हो जाये तो धोबी का तो कुछ नहीं लुटता, औरों के ही कपड़े जाते हैं। ठीक वैसे ही बैंकों का तो बाल बांका हुआ नहीं पर कई बेकसूर बेचारों की नींद भी गई और खाट भी। रुपयों की गड्डियों के उड़नखटोले में उड़ान भरने वालों ने तो कभी फली फोड़ी नहीं और सीधे फूस में आग फेंक दी। देश तर्क-वितर्क की आग में झुलस रहा है, बुद्धिजीवी पकौड़ा विश्लेषण में तल्लीन हैं और जनाब अंगूठा दिखाकर चलते बने।

राष्ट्रीय चिंता का विषय हो गिरावट

हाल में जारी नीति आयोग की 'स्वस्थ राज्य प्रगतिशील भारत' रिपोर्ट बताती है कि देश के 21 बड़े राज्यों में से 17 में जन्म समय पर लिंगानुपात गिरा है। इनमें 'विकास मॉडल राज्य गुजरात' में सबसे ज़्यादा 53 अंक की गिरावट आई है। गिरावट में दूसरे नम्बर पर हरियाणा है जहां 35 अंक की गिरावट दर्ज हुई। अनुमान है कि अगर हालत यही रही तो 2031 तक 1000 लड़कों के मुक़ाबले 898 लड़कियां ही होंगी जबकि वर्ष 2011 में यह आंकड़ा 939 था। इसी के साथ 2018 की आर्थिक सर्वे रिपोर्ट कहती है कि एक तरफ़ जहां देश की आबादी से पुत्र लालसा के चलते 6 करोड़ 30 लाख महिलाएं ग़ायब हैं वहीं 25 साल के नीचे की उम्र की 2 करोड़ 1 लाख 'अनचाही' बेटियां भी इस धरती पर हैं। अनचाही बेटी के फिनोमिना को हम हरियाणावासी शायद और भी अच्छे से पहचान सकते हैं। वहीं बेटे की चाहत के चलते पैदा हो गई। प्रयासों के बाद हालात देखकर यह भाव उभर कर आता है 'जितनी दवा की मर्ज़ उतना ही बढ़ता गया।' विशेषज्ञों द्वारा सुझाए जा रहे समस्या के स्वरूप व उसके इलाज की उपेक्षा नज़र आती है। उसकी अनुपस्थिति में 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ', 'बेटी खिलाओ', 'सेल्फी विद डॉटर', 'कुआं पूजन', 'छट्टी गवाओ', 'थाली बजाओ' आदि महत्वपूर्ण होते हुए भी जुमलेभर बनकर रह गए हैं। आंकड़ों की कलाबाज़ी भी इन रिपोर्टों के सामने टिक नहीं पा रही। कम से कम अब तो ज़िम्मेदार जगहों पर बैठे लोगों को यह स्पष्ट हो ही जाना चाहिए की केवल सतही हाथ-पैर पटकने से कुछ होने वाला नहीं समस्या को उसके पूरे क़द में पहचान कर उसके ख़िलाफ़ समग्रता से समस्या का समाधान करना पड़ेगा।

शब्द सामर्थ्य Shabd Samarth

बाएं से दाएं
1. जीत, फतेह 3. राशन सामान बेचने वाली एक जाति, वैश्य 6. मुर्गी की जाति की एक पक्षी, आधा... आधा बटेर 7. कमल, पंकज, भारत के एक दिवंगत प्रधानमंत्री का नाम 8. नहाने का स्थान, स्नानागार 10. ख्वाब, स्वप्न 12. बुलावा, निमंत्रण 14. तबाही, बर्बादी 17. कत्ल, वध 18. क्षतिपूर्ति, मुआवजा 19. करार, चैन, आराम 21. दृष्टि, निगाह 23. नाश करने योग्य 24. लाडला, प्यारा 25. सीताजी, जनकनंदनी।

ऊपर से नीचे
1. शादी, ब्याह 2. अनाथ, निराश्रित 3. साल, वर्ष 4. दोस्ताना, यारी 5. सुर, देव, भगवान 9. मनुष्य, इंसान, आदमी 11. पाटा जाना, चुकता करना, बात तय करना 12. कार्यक्षेत्र, गोल घेरा, वृत्त 13. अधीनता, मातहती, अधिकार 15. नगर 16. गैरजरूरी 20. दृष्टांत, सुपुर्दगी, उदाहरण 22. धरती, भूतल, धरातल।

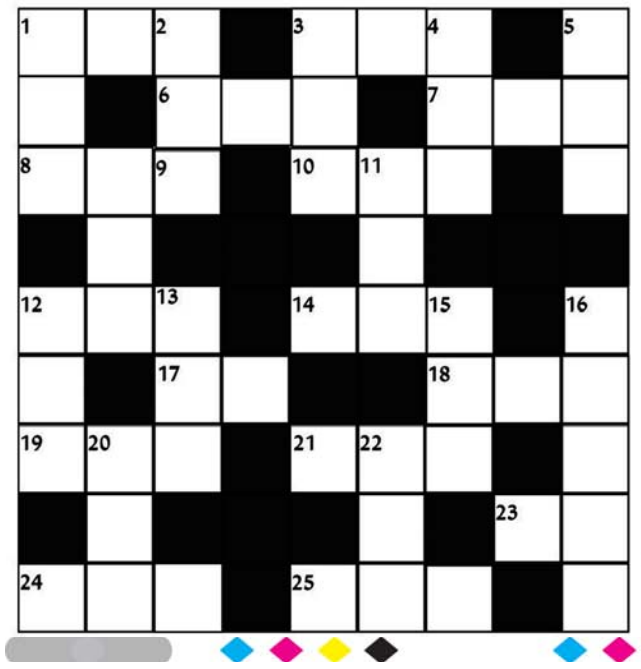

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 37 का हल

अं	त	■	म	री	ज	■	■	■
ग	ह	न	ता	■	ब	र	ब	स
■	की	■	धि	क्का	र	■	र	मा
■	का	■	का	■	द	वा	खा	ना
प	त	वा	र	■	स्त	र	■	■
ह	■	■	■	■	■	दा	मि	नी
ना	■	ए	ह	ति	या	त	■	लां
वा	च	क	■	हा	■	■	खू	ब
■	■	ता	ब	ड़	तो	ड़	■	र

सू-दोकू

	1			4			7	
		6	9		2			1
	7			6		8		2
1							8	
	8			5		2		3
3		2			4		1	
	3		2			4		
		8		1	6			7
9			4				2	

नियम
1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र. 19 का हल

3	9	6	8	2	5	4	7	1
8	2	5	1	7	4	6	3	9
7	1	4	6	9	3	8	2	5
1	8	9	3	6	7	2	5	4
2	6	7	5	4	8	1	9	3
5	4	3	9	1	2	7	8	6
6	7	2	4	3	9	5	1	8
9	5	1	7	8	6	3	4	2
4	3	8	2	5	1	9	6	7

राशिफल

मेष- कार्यक्षेत्र में भी आपके पक्ष में कुछ परिवर्तन हो सकते हैं, जिससे आपको लाभ होगा।
वृष- आर्थिक दिशा में सफलता मिलेगी। ससुराल पक्ष से लाभ होगा। विचारे कार्य सिद्ध होगें।
मिथुन- पिता के आशीर्वाद तथा अधिकारियों की कृपा से किसी बहुमूल्य वस्तु अथवा संपत्ति की प्राप्ति की अभिलाषा आज पूरी होगी।
कर्क- अकस्मात बड़ी मात्रा में धन की प्राप्ति होगी। व्यावसायिक योजनाओं को गति मिलेगी।
सिंह- व्यावसायिक रूप से आपकी तारिफ होगी और आपके प्रयासों को सराहा जायेगा।
कन्या- भाग्य की दृष्टि से आज का दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक तौर पर आप अच्छी वृद्धि प्राप्त कर लेंगे।
तुला- आज का दिन आपके लिए चुनौतीपूर्ण रहेगा। सभी की उम्मीदों पर खरा उतरने की आपकी विशेषता आज भी आपको यश देगी।
वृश्चिक- नई शुरुआत का दौर है एवं कार्यक्षेत्र में भी कोई नया प्रोजेक्ट शुरू करने की इच्छा रखेंगे, जिसमें अच्छे परिणाम भी आपको मिलेंगे।
धनु- आज घर की चीजों पर धन का खर्चा होगा। सांसारिक सुख भोग के साधनों में वृद्धि होगी।
मकर- आज व्यवसायिक क्षेत्र में मन के अनुकूल लाभ होने का हर्ष होगा।
कुंभ- किसी संपत्ति के खरीद-फरोख्त के समय उसके पूर्व संपत्ति के सारे वैधानिक पहलुओं पर गंभीरता से विचार कर लें।
मीन- कार्यक्षेत्र में जितनी कोशिशें आप करते रहेंगे अंत में उतनी ही सफलता आपको मिलेगी।